JAINS FOR INDIA

BJS eबुलेटीन 2020

Edition 13, 17th April 2020

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

प्रिय स्नेहीजन,

संपादक की कलम से

15 अप्रैल, 2020 को आदरणीय शांतीलालजी मुथ्था ने BJS FAMILY SUMMIT face book live पर RISK TAKING AND DECISION MAKING पर समाजजन से संवाद किया. उनके उद्गारों को अक्षरशः लिपिबद्ध कर आपके मार्गदर्शन हेतु इस अंक में प्रकाशित किया है.

निरंजन जुंवा जैन
सदस्य - BJS राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति

Risk Taking & Decision Making

साथियों! आप सभी कुशल होंगे व सुरक्षित होंगे. यह मेरा सौभाग्य है कि BJS Family Summit face book live के माध्यम से आपके साथ रुबरु होने का अवसर मिला है. मेरा विषय है RISK TAKING & DECISION MAKING. मैं कोई professional speaker नहीं हूं. मैं इस विषय पर आपके साथ मेरे गत 40 वर्षों के अनुभव साझा करूँगा. निर्णय लेना हमारे सभी के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है. सही निर्णय से हम 100% प्रगति कर सकते हैं और यदि निर्णय में कुछ ऊंच नीच हो जाये तो कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है. निर्णय लेने के साथ ही लक्ष्य (goal) निर्धारण करना आवश्यक होता है. व्यक्ति चाहे बड़ा हो या छोटा, सभी को जीवन में समय समय पर निर्णय लेने होते हैं. लिए गए निर्णयों के प्रभाव या परिणाम महत्वपूर्ण होते हैं. मनुष्य सामाजिक प्राणी है. वह प्रायः दूसरों या अपनों के प्रभाव में या उनकी दखलंदाज़ी से निर्णय लेता है. किन्तु क्या किसी के प्रभाव में आना जरूरी है? इन सब मुद्दों पर मेरे अपने अनुभवों की चर्चा आपसे कर रहा हूं.

श्री. शांतिलालजी मुथ्था
संस्थापक, BJS

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में लिए जाने वाले निर्णय मील के पत्थर की तरह होते हैं. जन्म होने के पश्चात माता पिता के निर्णय बच्चे के लिए महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि उनका अच्छा या बुरा प्रभाव उस बच्चे के दीर्घकालिक जीवन पर पड़ता है. जब बच्चा कक्षा 10 में आता है तो आगे की उच्च शिक्षा के संबंध में माता पिता को निर्णय लेने में तकलीफ पड़ती है. माता पिता दबाव भी अनुभव करते हैं क्योंकि आवश्यक नहीं कि वे सही निर्णय लेने में सक्षम हों. इस निर्णय में बच्चे के भविष्य का प्रश्न जुड़ा होता है. इसके पश्चात विवाह का निर्णय सामान्यतः माता पिता और परिवारजन द्वारा लिया जाता है. किन्तु उनकी योग्य निर्णय लेने की क्षमता पर प्रश्न उठता है. आजकल देखा जा रहा है कि निर्णय लेने में गलतियां हो रही हैं जिसके कारण शादियां और यहां तक सगाईयां भी टूट रही हैं. इसके पश्चात नौकरी या व्यवसाय का निर्णय कि क्या करना है, उसमें क्या और कितनी रिस्क है? उतार चढ़ाव की संभावनाओं के मध्य योग्य व सही निर्णय लेंगे तो निश्चित ही प्रगति होगी. विवाह करने का मेरा निर्णय सही बैठा, इसी कारण आज मेरा पारिवारिक जीवन खुशहाल है. मैंने construction लाइन का कार्य प्रारम्भ किया किन्तु मेरे पास अपनी पूंजी नहीं थी और न ही मैं इंजीनियर या प्रोफेशनल ही था. इससे पूर्व रियल एस्टेट broker के रूप में काम किया था. मुझे एक जमीन खरीदने की offer आयी किन्तु मेरे पास था कुछ नहीं. मुझे कहा गया कि इस जमीन का पेमेंट 3 साल में करना. काफी सोचने पर मैने निर्णय लिया, जमीन का सौदा किया, लक्ष्य निर्धारित किये और सफलता प्राप्त की. यहां मैने दो ही बातों का ध्यान रखा कि मेरी नीयत हमेशा साफ रहे और मेरी तरफ से किसी का भी कोई नुकसान न हो.

जब मैं 31 वर्ष का हुआ तो यह विचार आया कि मुझे व्यवसाय छोड़कर समाज सेवा के क्षेत्र में आना है. बड़ी मेहनत के बाद ठीक से व्यवसाय का विकास हुआ हो, ऐसे समय में व्यवसाय छोड़ देने का निर्णय लेना अत्यंत ही कठिन था. अनेक लोगो से सलाह ली, लगभग सभी की सलाह या राय मेरे विचारों के विपरीत ही थी. कुछ ने कहा यह पागलपन है. किसी ने कहा कि आपका भाग्य अच्छा है, व्यवसाय भी बड़ा हो गया है, आपका समय भी अच्छा चल रहा है, इसे रोकड़ी करने में ही समझदारी है. समाज सेवा 50 या 60 वर्ष के होने पर करना, अभी तो कमाई करनी चाहिए. मैंने लगभग 100 व्यक्तियों से इस विषय में सलाह ली होगी किन्तु एक भी मेरे विचारों से सहमत नहीं था. मेरे जीवन का यह सर्वाधिक अहम और

Contd...

...Risk Taking & Decision Making

महत्वपूर्ण turning point था. मेरा हृदय और मस्तिष्क दोनों ही कह रहे थे कि व्यवसाय छोड़ देना योग्य रहेगा. एक वर्ष अवश्य लगा किन्तु यह निर्णय अंततः लिया.

एक दूसरा बड़ा निर्णय मुझे ओर लेना था. सामाजिक कार्य या सेवा करना है तो मेरे पास आय का स्थाई श्रोत (permanent source) होना चाहिए, अन्यथा यह सेवा कार्य करना सम्भव नहीं होगा. यह विचार आया कि मेरे पास जो जमीने हैं उन पर commercial building बना कर भाड़े चढ़ा दूं. जो आय हो उसमें से घर खर्च की राशि देकर शैष सामाजिक गतिविधियों में नियमित रूप से खर्च करूँ. इस हेतु भी शुभचिन्तकों, मित्रों व अनुभवी व्यक्तियों से सलाह मांगी. कुछ ने कहा, यह business model नहीं है, व्यवसाय में turnover बड़ा होना चाहिए, आपतो investment को dead कर देंगे. मैंने पाया कि जो flats construct करके मैं बेच रहा था उसमें लगभग 20% के आसपास लाभ मिलता था किंतु कुछ वर्षों में ही उन फ्लैट्स की valuation 500% तक बढ़ जाती थी जिसका लाभ मुझे नहीं मिल रहा था. मैंने calculated risk लेने का निर्णय लिया. Risk और decision के साथ calculated risk का अर्थ समझ लेना, योग्य व सही निर्णय लेने हेतु आवश्यक है. मेरे ये दोनों निर्णय कितने सटीक व सही रहे इसकी जानकारी आप सभी BJS कार्यकर्ताओं व मित्रों को है.

इसके पश्चात मैंने भारतीय जैन संघटना की स्थापना की. कुछ मित्रों की सलाह थी कि जब मैं राष्ट्रीय स्तर पर समस्त देश के लिए कार्य करना चाहता हूँ तो जैन शब्द, जिसमें मात्र एक community के साथ प्रत्यक्ष जुड़ाव दिखाई देता हो, तो एसा नामकरण नहीं करना चाहिए. किन्तु मैंने अन्तिमरूप से भारतीय जैन संघटना नाम रखने का निर्णय लिया क्योंकि मैं यह चाहता था कि विभिन्न राज्यों तथा शहरों के जैन समाज के लोगों को एक माला के धागे में पिरो सकूं. जैन समाज के लोगों को सामाजिक व जनहित के कार्यों में आगे लाना व active करना भी मेरी सोच का हिस्सा था. इस तरह जैन समाज के साथ मिलकर जनहित के कार्य प्रारम्भ किये और अब वर्षों से करता आ रहा हूँ. लातूर भूकम्प में अनाथ हुए 1200 बच्चे गोद लिए, अंडमान सुनामी में राहत कार्य, काशमीर भूकम्प, सूखा मुक्त भारत आदि के ये सभी कार्य देश के लिये किये न कि मात्र जैन समाज के लिए. किन्तु राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया जैन समाज का नियमित और स्थिर योगदान सदैव रहे, यही मेरा उद्देश्य है.

लातूर भूकंप के समय में ऐसे 1200 बच्चे जो अनाथ हो गये थे पुणे लाकर उनकी शिक्षा की जवाबदारी लेना चाहता था. उस समय इन बच्चों को रखने के लिए मेरे पास न कोई जगह थी और न ही भूमि. सबके मन में यह प्रश्न था कि 1200 बच्चों को कैसे manage करोगे, बच्चे भाग जाएं या गुम हो जाएं तो? कुछ भी बुरा हो सकता था. किन्तु इन बच्चों को अपराध या भीख मांगने से बचाने का विचार मन से निकलता नहीं था. अंततः मेंने risk लेने का निर्णय लिया और भाड़े जी जगह में स्कूल शुरू किया. उसके बाद स्कूल भवन भी बना और बच्चों की स्थाई आवास व्यवस्था भी हुई. स्कूल का रजिस्ट्रेशन हुआ. आज तक हज़ारों बच्चे यहां से पढ़कर निकल चुके हैं. मन में संकल्प, दृढ़ निश्चय और स्वार्थ रहित जनहित के लिए निर्णय का क्या महत्व है, इसका मूल्यांकन आप स्वयं करें.

विवाह आदि के निर्णय गलत होना आम बात होती जा रही है. छोटे छोटे कारणों से तलाक बढ़ते जा रहे हैं. विवाह के कुछ ही महीनों या दिनों में एसा क्या हो जाता है कि तलाक हो जाता है. आज से कुछ वर्षों पूर्व संयुक्त कुटुंब प्रथा थी. व्यवसाय से लेकर विवाह आदि के सभी निर्णय परिवार के मुखिया द्वारा लिए जाते थे. मुखिया यदि अनुभवी और समर्थ हो तो कोई समस्या नहीं आती थी और घर अच्छा चलता था. अब समय बदला है. यदि घर के मुखिया ने सही निर्णय नहीं लिया या फिर निर्णय थोपा गया हो तो गड़बड़ होती है. आजकल युवा भी भावनाओं में बहकर अपने इच्छित पात्र से विवाह कर तो लेते हैं किंतु परिवार की वेदनाओं की कीमत पर. अभिभावक हो या युवा साथी, सभी के लिए योग्य निर्णय क्या होता है, समझने की आवश्यकता है. निर्णय लेते समय प्रैक्टिकल बनना बहुत जरूरी है क्योंकि जो परिणाम आने वाले हैं उससे किसी का जीवन दाव पर लगने की संभावना रहती है.

निर्णय लेने की प्रक्रिया में Risk की अहम भूमिका होती है. यह भी वास्तविकता है कि risk लिए बिना कोई काम पूर्ण नहीं होता. 1992 में बाबरी मस्जिद को लेकर पूरे देश में कर्फ्यू लगा. घर से बाहर नहीं जा सकते थे. में भी घर में बैठा था, किन्तु मेरा कार्यकर्ता मन मुझे बार बार कह रहा था कि मैं कुछ करूं. हमने जैन कुल में जन्म लिया, भगवान महावीर के वंशज हैं जो कीड़े मकोड़ों को भी बचाते हैं. उस समय में देश में मारकाट मची हुई थी. मैंने निर्णय लिया कि हम पुणे से

Contd...

...Risk Taking & Decision Making

नागपुर तक की पैदल शांति यात्रा निकालेंगे और देशवासियों से अपील करेंगे कि साम्प्रदायिक सौहार्द बनाकर रहें. महाराष्ट्र के हमारे कार्यकर्ताओं से विचार विमर्श चला. क्या, क्यों, risk factor और लोग क्या सोचेंगे जैसे मुद्दे सामने आए. निर्णय लेने में एक बात सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि 'लोग क्या कहेंगे' के आधार पर निर्णय नहीं लेने चाहिए. सगाई के बाद यह पता चले कि लड़के लड़की के विचार मिलते नही. लेकिन लोग क्या कहेंगे के डर से उन दोनों की शादी करा देने का निर्णय कितना उचित है क्योंकि आज नहीं तो कल उनका तलाक होना ही है.

लिए गए निर्णय में दृढ़ता बहुत जरूरी है. मेरे ही मासाजी जो जाखेड़ (महाराष्ट्र) में रहते थे, उनका कम आयु में निधन हो गया. उनके तीन बेटे थे जिनकी उम्र भी कम ही थी. मैंने उनके सामने पुणे shift हो जाने का प्रस्ताव रखा. लोगों ने उन्हें सलाह दी की वहां जाकर क्या करोगे. यहाँ खाने को तो है. पुणे में यदि नहीं जमा तो लोग क्या कहेंगे. जितने मुंह, उतनी बातें. मैं भी दृढ़ रहा, उन्हें पूणे लेकर आया और इस बात को 30 वर्ष हुए, मेरे इन मौसेरे भाइयों के बच्चे अमेरिकन सिटिज़न हैं. उनको पुणे लाने में risk थी, जो मैंने उठाई. यह risk इसलिए भी उठा सका क्योंकि मैं पॉजिटिव था. नेगेटिविटी से लिया गया निर्णय कभी सही नहीं होता. हमें स्मरण में रखना चाहिए की बच्चों में spark होता है, potential होता है, उन्हें अवसर देने का उत्तरदायित्व हमारा है.

अभी कोरोना महाप्रलय की स्थिति में Mobile Medical Van सेवाएं आरम्भ करने का निर्णय लिया. अनेक प्रश्न थे. Panic का माहौल है, Red Zone में कैसे जाएंगे? Mobile Van और डॉक्टर कहाँ से मिलेंगे? क्या सरकार अनुमति देगी? आज हम फ़ोर्स मोटर्स के सहयोग से 50 मोबाइल वैन के जरिये प्रतिदिन 5,000 लोगों का इलाज कर रहे हैं और कोरोना के suspected मरीजों को सिविल अस्पताल पहुंचा रहे हैं. आने वाले कुछ दिनों में मोबाइल वैन की संख्या 200 हो जाएगी, हज़ारों का इलाज प्रतिदिन होगा. जो करना है उसके लिए लगन होनी चाहिए, सफलता स्वयं आपके पास चल कर आएगी. इस project पर हम बहुत बड़ी risk उठाकर काम कर रहे हैं. खुद की जान जोखिम में डालकर दूसरों की जान बचाने के लिए काम कर रहे हैं. सर्दी जुकाम के मरीज कोरोनो के वहम से ही मर न जाएं, उनको दिलासा देंने का कार्य भी हमारी उस सेवा में हो रहा है. एक अच्छे CAUSE के लिए यह मानवीय सेवाकीय कार्य प्रारम्भ किया है. आने वाले दिनों में प्रतिदिन 25000 लोगों का checkup और इलाज कर सकेंगे. रक्त संग्रह के लिये अग्रिम निर्णय लिए और जिस पर भी कार्य ही रहा है. योग्य समय पर अग्रिम रूप से निर्णय लेना महत्वपूर्ण होता है.

मैंने लोगों से कहा कि सामुहिक विवाह करो. इसके बड़े बड़े आयोजन भी किये. लेकिन एसा नहीं कि मेरे लिए कुछ और तथा बाकी लोगों के लिए कुछ और. मेरे बेटे और बेटी का विवाह सामुहिक विवाह आयोजन में हुआ. हमारी कथनी और करनी में कहीं फर्क नहीं होना चाहिए.

गुजरात में 2001 में भूकंप के समय सुरेश दादा के साथ मिलकर 25 स्कूल बनाने के निर्णय के साथ काम प्रारम्भ किया और मात्र 90 दिनों में 365 स्कूलों का निर्माण कर दिया. यह कोई चमत्कार नहीं था. ज़ुनून चाहिए, पागलपन की हद तक जाकर काम करते हैं तो भगवान भी साथ में खड़ा हो जाता है. हमारे भाग्य में सफलता है तो मिलेगी किन्तु वह ईश्वर के हाथ में है. परिश्रम का फल प्राप्त करना हमारे हाथ में है.

निर्णयों के संदर्भ में हमारे घर परिवार की बात करें तो प्रायः तीन पीढ़ियां साथ में रहती हैं. उनके मध्य communication gap, difference of opinion, अलग अलग style एवं aspirations आदि के कारण निर्णयों के मामलों में परिवार की bonding बिखर सी जाती है. पुरानी और नई पीढ़ी में विचारधारा में बहुत बड़ा अंतर होता है. परिवार में सभी सदस्यों का Sacrifise ज़रूरी होता है. ऐसा भी होता है कि निर्णयों में परिणाम की या तो सोचते नहीं या बहुत ज्यादा सोचते हैं. परिवार, व्यवसाय या समाज हेतु निर्णय लेने में style भी भिन्न होनी चाहिए. Risk या calculated risk का स्थान सभी निर्णयों में होना चाहिए. युवा पीढी उसके निर्णय स्वयं ले हेतु उन्हें बाहर से support करना चाहिए. Ownership उन्हें देनी चाहिए ताकि वे उत्तरदायी व प्रैक्टिकल बने.

निर्णय टालने नहीं चाहिए. मात्र सोचने में समय गवाना ठीक नहीं. 10 निर्णयों में से हो सकता है कि 8 सही निकले. लेकिन नीयत अच्छी है तो सफलता मिलती ही है. निर्णय लेना सचमुच एक कला है, जिसे हमें हमारी निर्णय क्षमताओं को विकसित करके हासिल करना है. हमें हमारी प्राथमिकताएं सदैव स्मरण में रखनी होगी. प्रथम परिवार, द्वितीय व्यवसाय और अंत में समाज.

To view all videos : : **bit.ly/BJSPune**